ISSN 2230-7850 Impact Factor : 4.1625(UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | April - 2016

Indian Streams Research Journal

निराला और शुभदर्शन के काव्य में विद्रोह : एक तुलनात्मक अध्ययन

जोगिता रानी[1] , विनोद कुमार [२]
[1]रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग
[2]लवली प्रोफ़ैशनल युनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्रस्तावना

मनुष्य के जन्म के साथ ही विद्रोह का जन्म हुआ है। मनुष्य और विद्रोह परस्पर साथ ही चलते हैं। विद्रोह मनुष्य की मूल भावना है, जिसमें अस्वीकार की प्रवृति मुख्य रूप से रहती है। साधारण रूप में किसी राज्य, व्यक्ति, विचारधारा या रूढ़िगत परंपरा को न मानकर उसके विपरीत कार्य करना ही विद्रोह है। विद्रोह को मुख्य दो भागों में विभाजित किया जा सकता है – नकारात्मक और सकारात्मक। नकारात्मक विद्रोह में भावनाएं स्वच्छ नहीं होती लेकिन सकारात्मक विद्रोह जन–कल्याण की भावना से ओत-प्रोत होता है। हिन्दी विश्वकोश के अनुसार विद्रोह का अर्थ होता है -"'अनिष्टाचरण', किसी के प्रति होने वाला द्वेष या आचरण, जिसको हानि पहुंचे, राज्य में होने वाला भारी उपद्रव जो राज्य को कष्ट पहुंचाने या नष्ट करने के उदेश्य से हो।"[1]

कवि या साहित्यकार विद्रोह की भावना से रहित नहीं हो सकता। जब कवि या साहित्यकार अपने आस पास सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विसंगतियों को देखता है तो उसमें विद्रोह की भावना उत्पन्न होती है। कवि अपनी इस विद्रोह की भावना को लेखनी का रूप देकर जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत करता है। कविता और विद्रोह दोनों साथ-साथ चलते हैं। दोनों का आपस में घनिष्ठ संबंध है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जब लिखते हैं कि, "कविता मनुष्य भाव की रक्षा है और वह सभ्यता के आवरणों के भीतर बंधकर प्रकृति के साथ अपने संबंध को भूले मनुष्य के शेष सृष्टि के साथ रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह करती है।"[2] तो वह कविता की इस विद्रोही सृजनशील प्रकृति की और ही संकेत करते हैं। हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नागार्जुन, मुक्तिबोध, धूमिल, महादेवी वर्मा, मैथिलीशरण गुप्त और रघुवीर सहाय इत्यादि विद्रोही कवि माने जाते हैं। इन सभी कवियों के काव्य में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषमताओं को लेकर विद्रोह की भावना को देखा जा सकता है। भारतेन्दु युग से ही कविता में विद्रोही स्वर देखे जा सकते हैं। आधुनिक युग के छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और समकालीन आधुनिक कवि शुभदर्शन कुमार के काव्य में भी संघर्ष एंव विद्रोह के स्वर देखने को मिलते हैं। कोई भी एक कवि दूसरे कवि जैस नहीं होता। दोनों की विचारधारा, लेखन का ढंग, भाषा और भाव आदि भिन्न होते हैं। लेकिन दोनों का उद्देश्य अवश्य एक हो सकता है। यही बात निराला और

शुभदर्शन के काव्य में भी देखी जा सकती है। निराला और शुभदर्शन में चाहे समय का अंतर है लेकिन दोनों के काव्य में मुख्य समानता है – विद्रोह भावना।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जीवन प्रारम्भ से ही संघर्षमयी एंव विद्रोह से परिपूर्ण रहा है। प्रारम्भ से ही लेखकों ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व की आलोचना की है। इसीलिए निराला के काव्य में विद्रोह के स्वर देखे जा सकते हैं। निराला ने स्वंय लिखा है-"जब एक रूढ़ि को, एक ही आदत को, अज्ञात भाव से हम मानते जाएंगे, तब उस आदत की तरह हम भी रूढ़ बन जाएंगे।"[3] इस लिए निराला ने उस रूढ़िगत जड़ता को मिटाने का प्रयास किया है। निराला ने सामाजिक विसंगतियों और रूढ़िगत परम्पराओं का विरोध किया है। इस विद्रोह भावना में जन-हित की भावना निहित है। निराला ने स्वंय को कभी ऊँचा बताने के लिए काव्य रचना नहीं की। उन्होंने सदैव साधारण जीवन व्यतीत किया है। निराला के व्यक्तित्व एंव कृतित्व पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए नन्ददुलारे बाजपायी लिखते हैं कि, "निराला के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता शिष्टाचार के कुत्रिम स्वरूप को खंडित कर सत्याचार की प्रतिष्ठा करने में थी। जो लोग जन्म से ही बड़े होकर आते हैं वे बड़प्पन की रक्षा में सारी शक्ति लगा देते हैं और एक मिडियाक्रिटि का ही निर्माण करते हैं। निराला में इस प्रकार की कोई मिडियाक्रिटि नहीं थी।"[4] निराला ने समकालीन सामाजिक व्यवस्था को नहीं माना और अपनी बेटी सरोज की शादी एक साधारण नवयुवक से करा दी। निराला ने सामाजिक आडंबरों का विरोध करते हुए कहा है –

"तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम,
लग्न के पढ़ुंगा स्वंय मंत्र,
यदि पंडित जी होंगे स्वतंत्र।"[5]

दूसरी तरफ शुभदर्शन कुमार के काव्य में भी सामाजिक विषमतायों के विरुद्ध विद्रोह की भावना देखी जा सकती है। वह समाज की समस्याओं से भलि-भांति परिचित दिखाई पड़ते हैं। शुभदर्शन ने समाज की कुरीतियों का विरोध भी किया है, जिस कारण उनको जीवन में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा। शुभदर्शन के संदर्भ में शीशान्तु लिखते हैं कि, "शुभदर्शन समाज की समस्याओं के प्रति सजग नागरिक की भांति मानिद शासन-प्रशासन तक पहुंचाने के लिए एक वाहक का काम नहीं करता बल्कि एक प्रहरी उनसे टकराने का भी दम दिखाता है। ज़िंदगी से समझौता करना उसकी फितरत में नहीं, यही कारण है कि अवसरवादियों के दंश का हर जगह यह शिकार रहा पर हिम्मत नहीं हारी।"[6] शुभदर्शन ने प्राचीन संस्कारों को जो युवा पीढ़ी भूलती जा रही है उस पर 'संस्कार का साफ्टवेयर' नामक कविता के द्वारा व्यंग्य किया गया है –

"आज कंप्यूटर युग में ,
बनाते हैं... बच्चे,
नए- नए सोफ्टवेयर,
संस्कार कौन सा सोफ्टवेयर है,
...पूछते हैं वे।"[7]

निराला ने जीवन में आर्थिक समस्याओं का सामना किया है। इसीलिए निराला के काव्य में भारत की आर्थिक दुर्दशा का चित्रण दिखाई देता है। उन्होंने स्वंय आर्थिक विपन्नताओं को भोगा है। भारत में आर्थिक समानता नहीं है। यदि कोई अमीर है तो बहुत अमीर है और अगर कोई गरीब है तो इतना कि अपना और अपने परिवार का पेट भरने की खातिर भीख मांगने के लिए मजबूर है। निराला ने अपने काव्य में यथार्थ को प्रस्तुत किया है। साधारण मनुष्य को किस प्रकार समाज में अपना जीवन निर्वाह करने के लिए आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है, निराला ने इसी स्थिति को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। अपनी 'भिक्षुक' नामक कविता में निराला ने इसी की अभिव्यक्ति की है –

"वह आता, दो टुक कलेजे के करता पछताता,
पथ पर आता, पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक।"[8]

निराला की तरह ही शुभदर्शन ने भी अपने काव्य में साधारण मनुष्य की आर्थिक समस्याओं को प्रस्तुत किया है। आधुनिक युग में केवल अर्थ की ही महत्ता रह गई है। किसी से सम्बन्ध भी केवल व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को देखकर ही स्थापित किया जाता है। शुभदर्शन ने मेहनतकश लोगों के दुख और कष्ट आदि को भी प्रस्तुत किया है। आर्थिक अभाव से ग्रस्त लोगों के प्रति कवि की दृष्टि संवेदनशील रही है। शुभदर्शन को मध्यवर्गीय लोगों की अवसरवादिता अच्छी नहीं लगती कि किस प्रकार मध्यवर्गीय लोग अपनी आर्थिक पूर्तियों के लिए सही–गलत का अंतर समझे बिना रास्ते अपना लेते हैं। इस अवसरवादिता को शुभदर्शन ने अपनी कविता 'चिड़ियों का चंबा' में प्रस्तुत किया है –

"हां! मृत पशु ही होते हैं,
मध्य–वर्गीय ... बुद्धिजीवी,
ढोते हैं उम्र भर ... अपनी ही सलीब।"[9]

निराला और शुभदर्शन दोनों के काव्य में राजनीतिक व्यवस्था के प्रति विद्रोह की भावना देखी जा सकती है। लेकिन अंतर सिर्फ यह है कि निराला के समय भारत अँग्रेजी हुकूमत के अधीन था लेकिन शुभदर्शन के समय भारत स्वतंत्र है। इस लिए निराला ने अपने काव्य में पराधीन भारत की राजनीतिक परिस्थितिओं को अभिव्यक्त किया है। भारत में जमींदार और साहूकार केवल राजनीतिक सत्ता चाहते थे। भारतीय कांग्रेसी प्रवर्तक भी अँग्रेजी शासन के अधीन ही थी। देश के कुछ क्रांतिकारी संगठन स्वाधीन भारत के लिए संघर्ष हो गए थे और आन्दोलनों ने गति प्राप्त कर ली थी। इस लिए निराला ने स्वतंत्र रूप से अँग्रेजी शासन और भारतीय कांग्रेस पर व्यंग्य करते हुए लिखा है –

"गांधीवादी आए, देर तक गांधीवाद क्या है, समझाते रहे,
देश की भक्ति से, निर्विरोध शक्ति से,
राज अपना होगा, जमींदार साहूकार अपने कहलाएंगे।"[10]

शुभदर्शन ने अपने काव्य में स्वतंत्र भारत की राजनीतिक स्थिति को बयान किया है कि किस प्रकार चुनाव के दिनों में राजनीतिक नेता गांव–गांव, शहर–शहर, गली–गली में जाकर लोगों से मिलते हैं और उनकी समस्याएं सुनते हैं। उनकी समस्याओं को सुलझाने का भ्रम उनके हृदयों में पैदा करते हैं, लेकिन मतलब निकलते ही जनता को भूल जाते हैं। शुभदर्शन ने राजनीतिज्ञों की इसी कूटनीति को प्रकट किया है। शुभदर्शन के काव्य के बारे में विनोद तनेजा लिखते हैं कि, "शुभदर्शन ने अपनी कविताओं में युगीन परिवेश की समस्याओं को जिस तरह अपने शब्दों में उकेरा है, उससे स्पष्ट हो जाता है कि कवि ने कुछ महसूस करने के बाद ही कलम तूलिका से कागज के केनवास पर छोटी बड़ी रेखाओं के चित्र बनाए हैं।"[11] शुभदर्शन ने राजनीतिज्ञों के द्वारा किए जाते झूठे वायदों को बयान करते हुए लिखा है –

"इस पर विश्वास मत करो, इससे फरियाद न करो,
सफेदपोश के रूप में यह गिद्ध है, और,
गिद्ध नरभक्षी होता है।"[12]

निराला और शुभदर्शन ने विभिन्न समस्याओं के प्रति विद्रोह की भावना को व्यक्त किया है। इनमें पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति भी विद्रोही स्वर देखे जा सकते हैं। निराला ने 1939 में 'कुकुरमुत्ता' नामक कविता के द्वारा इसी पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति विद्रोह को व्यक्त किया है। 'कुकुरमुत्ता' के संदर्भ में धनजय वर्मा लिखते हैं कि "कुकुरमुत्ता का व्यंग्य उन तथाकथित साम्यवादियों और कुत्सित बुद्धिजीविओं पर है जिन्हे विश्व की हर वस्तु में अपना प्रपंच दिखाई देता है।"[13] कुकुरमुत्ता के माध्यम से निराला ने यह बताया है कि पूंजीपति वर्ग गुलाब की तरह गरीबों का खून चूसता है और उनका शोषण करता है–

"अबे सुन बे गुलाब, भूल मत गर पाई खुशबू रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट।"[14]

शुभदर्शन ने भी अपने काव्य के माध्यम से पूँजीपति वर्ग के प्रति आक्रोश को व्यक्त किया है। कवि ने मजदूर वर्ग के प्रति स्हानुभूति प्रकट की है। शुभदर्शन के बारे में हुकुमचंद लिखते है, "कमजोर और समाज के अत्याचारों से सताए हुए लोगों में कवि की सहानुभूति स्पष्टत:

परिलक्षित होती है।"[15] पूँजीपति वर्ग मजदूर वर्ग से अधिक काम करवाता है और उनके किए गए काम का पूरा वेतन भी नहीं देता। अर्थ पर कुछ लोगों का ही अधिकार है। अमीर वर्ग गरीबों का आर्थिक शोषण करता है। पूंजीवाद व्यक्ति को उसकी वास्तविकता भुला देता है और व्यक्ति केवल अर्थ प्राप्ति के लिए अपने सारे रिश्ते नाते तक भूल जाता है। पूँजीपति वर्ग के प्रति कवि ने विद्रोह को व्यक्त करते हुए लिखा है –

"पूँजीपति हो गई है गौरैया, पुराना सब भूलने को,
बेताब है – गौरैया संस्कार भी अहंकार भी ,
वादे भी दावे भी सब में उलझकर रह गई है–गौरैया।"[16]

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि छायावादी कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और आधुनिक समकालीन कवि शुभदर्शन कुमार विद्रोह के कवि हैं | चाहे दोनों में समय का अंतर है लेकिन निराला और शुभदर्शन का मुख्य मंतव्य समाज की विसंगतियों को जन साधारण के समक्ष लाना रहा है। दोनों कवियों ने वही बयान किया जो उन्होंने वास्तविक जीवन में भोगा है। दोनों कवियों की मूल भावना एक ही है। निराला और शुभदर्शन ने सामाजिक विघटन, मानवीय मूल्यों की गिरावट, नेताओं के दाव-पेच, आर्थिक विषमतायों के प्रति आक्रोश को अपनी लेखनी का रूप दिया है। दोनों कवि अपने मंतव्य में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1 . नगेन्द्रनाथ वसु : 'हिन्दी विश्वकोश',भाग 29, बी॰आर॰पब्लिशिंग कारपोरेशन, दिल्ली 1986 .
2 . आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : 'कविता क्या है', संकलित श्रेष्ठ निबंध, रामचन्द्र तिवारी, राजकमल प्रकाशन, 1985 .
3 . निराला : 'सामाजिक व्यवस्था', निराला रचनावली, खण्ड छः, नंदकिशोर नवल, राजकमल प्रकाशन,1973, पृष्ठ -305 .
4 . नन्ददुलारे बाजपायी : 'कवि निराला', वाणीवितान प्रकाशन, दिल्ली, 1965, पृष्ठ -19 .
5 . निराला : 'सरोज स्मृति', रचनावली खण्ड एक, पृष्ठ – 303-304 .
6 . विनोद तनेजा : 'संघर्ष से सरोकार का कवि:शुभदर्शन, विभोर प्रकाश, अमृतसर, 2014, पृष्ठ-25 .
7 . शुभदर्शन : 'संघर्ष बस संघर्ष', युक्ति प्रकाशन, दिल्ली, 2011, पृष्ठ-55 .
8 . निराला रचनावली, प्रथम खण्ड, पृष्ठ – 17 .
9 . शुभदर्शन : 'संघर्ष ममता का', विभोर प्रकाशन, अमृतसर, 2012, पृष्ठ-50 .
10 . निराला : 'राग –विराग', (सं) रामविलास शर्मा, लोक भारती प्रकाशन, 1977 .
11 . रमेश सोनी : 'समय से मुठभेड़ का जनकवि: शुभदर्शन', सभ्या प्रकाशन, नई दिल्ली 2013, पृष्ठ – 35 .
12 . शुभदर्शन : 'संघर्ष जारी है', दीपक पब्लिशर्ज, जालंधर, 1999, पृष्ठ – 78 .
13 . धनजय वर्मा : 'निराला-काव्य और व्यक्तित्व', विद्या प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1965,पृष्ठ-179 .
14 . छायावादी काव्य : 'राग-विराग आलोचना खण्ड', रेखा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृष्ठ -12 .
15 . रमेश सोनी : 'समय से मुठभेड़ का जनकवि:शुभदर्शन', सभ्या प्रकाशन, नई दिल्ली, 2013, पृ-34 .
. 16 शुभदर्शन ' :संघर्ष बस संघर्ष', युक्ति प्रकाशन, दिल्ली,2011 , पृष्ठ . 67 –